4. समकालीन हिंदी कविता में नारी का स्थान

पुनीत शर्मा
नेट, एम. ए., बी. एड़,
भिवानी (हरियाणा)

सार

नारी आदिकाल से ही हमारी सभ्यता, संस्कृति, साहित्य और कविता के साथ जुड़ी रही है। नारी ने हर कठिन परिस्थिति में पुरूष का साथ देकर, उसकी जीवन–यात्रा को सरल बनाया है और उसके अभिशापों को स्वयं झेल कर उसे अपने स्नेह, ममता, त्याग और समर्पण रूपी वरदान दिये हैं। समकालीन हिंदी कविता में नारी बराबर ही चर्चा का विषय रही है। भिन्न–भिन्न प्रसंग तथा संदर्भ में नारी का बहु–आयामी अस्तित्व प्रस्तुत किया गया है। नारी की अस्मिता एवं गुणवत्ता का आकलन केवल कवियों एवं साहित्यकारों ने ही नहीं किया अपितु विश्व के इतिहासकारों ने भी यह माना है कि स्त्रियों की उन्नति या अवनति पर ही किसी राष्ट्र की उन्नति या अवनति निर्भर है। इस शोध–पत्र में समकालीन हिंदी कविता में नारी की स्थिति को स्पष्ट किया गया है।

मुख्य–शब्द : नारियों की भारतीय समाज में दशा, नारी समस्याएँ, नारी उत्थान के प्रयास।

आदि कवि वाल्मीकि नारी को सम्मानित और प्रतिष्ठित स्थान देते हुए रामायण में कहते हैं–

''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।।''

अर्थात् जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं और जहाँ स्त्रियों की पूजा नहीं होती है, उनका सम्मान नहीं होता है वहाँ किये गये समस्त अच्छे कर्म निष्फल हो जाते हैं।

भारतीय संस्कृति में शिव के 'अर्द्ध नारीश्वर' रूप की संकल्पना नारी के महत्त्व को स्पष्ट करती है। भारतीय संस्कृति में वेदों से लेकर वर्तमान तक नारी को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त रहा है। शास्त्रों ने नारी के तीनों रूपों का विश्लेषण करते हुए कहा है कि वह सेवा को अधिकार समझती है, इसलिए वह देवी है। वह त्याग करना जानती है, इसलिए वह साम्राज्ञी है। यह विश्व उसके ममतामय आँचल में वात्सल्य से ओत–प्रोत स्थान पा सकता है, इसलिए वह विश्व जननी है।

समकालीन कविता में नारी के यही विविध रूप प्रतिबिम्बित हुए हैं। आधुनिक काल के कवियों में जयशंकर प्रसाद ने नारी के लिए कहा है कि –

''नारी ममता माया का बल,
वह शक्तिमयी छाया शीतल।''

नारी नर के जीवन की पूरक होती है। अतुल कृष्ण गोस्वामी ने इसी बात को स्पष्ट करने के लिए कहा है कि –

''नारी नर की आलोक राशि,
नारी नर की चित्ति का प्रसार।
दोनों का न्यायोचित्त समत्व,
उन्मीलित करता स्वर्ग द्वार।।''

नारी को पुरानी रूढिवादी सोच से मुक्त करने का प्रयास भी अनेक कवियों ने किया है। इन कवियों ने नारी को ऐसे पुरातन संस्कारों को त्यागने के लिए कहा है, जो नारी की प्रगति में बाधक हैं। जगन्नाथ प्रसाद मिलिन्द नारी को सचेत करते हुए कहते हैं कि–

''जो चाटुकारिता की सीमा में तुमको
आबद्ध रखे, ठुकरा दो नर की माया।
युग–युग की प्रेरक शक्ति, उठो, फिर नारी
देखो जग के आँगन में नवयुग आया।''

नारी–सम्मान के पक्षधर कवि स्व. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' कहते हैं कि–

''जो नारी में कामुकता ही देखें, वे भी क्या मानव हैं ?
वे तो बस, चाण्डाल अधम, वे तो बस पूरे दानव हैं।''

नारी के उदात्त तथा उदार रूप का वर्णन करते हुए जयशंकर प्रसाद ने 'कामायनी' में बहुत पहले ही कहा है कि –

''नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास रजत नग पग तल में।
पीयूष स्त्रोत–सी बहा करो,
जीवन के सुन्दर समतल में।''

प्रभा खेतान, सुमन राजे की नारी दृष्टि, नारी–अस्मिता को उजागर करती है। डॉ. रश्मि बजाज की इक स्वर, चलोगे मेरे साथ तुम, बेघर, अपना आकाश, कविताएँ नारी के अस्तित्व बोध व नारी–स्वातन्त्र्य का प्रबल रूप में उद्घोष करती हैं। डॉ. रश्मि बजाज की कविता 'अपना आकाश' का एक अंश द्रष्टव्य है–

''चलो आज सब मिलकर जाएँ
छीन लाएँ अपना आकाश
अपने हिस्से की वो धरती
अपने हिस्से का आकाश।''

समकालीन हिंदी कविता में नारी पर हो रहे अत्याचारों तथा शोषण का वर्णन भी किया गया है। औरतों का शारीरिक, मानसिक, भावात्मक यानि सर्वरूपेण शोषण, उनकी दयनीय अवस्था का चित्र, जहाँ औरत होना ही अभिशाप है, उदय प्रकाश की 'औरतें' कविता में देखा जा सकता है–

''हजारों लाखों में छुपती हैं गर्भ के अंधेरे में
इस दुनिया में जन्म लेने से इन्कार करती हुई
वहाँ भी खोज लेती हैं उन्हें भेदिया तरंगें
और वहाँ भी भ्रूण के अंधेरे में उतरती हैं
हत्यारी कटार।''

आधुनिक काल के कवियों ने समाज को दैहिक नारी के भीतर छिपी मानसिक नारी के विषय में सोचने के लिए बाध्य किया है। दिनकर जी ने उसी अज्ञात मर्म की ओर संकेत करते हुए कहा है कि–

''नारी के भीतर असीम जो एक ओर नारी है,
सोचा है,उसकी रक्षा पुरूषों में कौन करेगा ?''

हमारे समाज में कन्या–भ्रूण हत्या की समस्या बढ़ती ही जा रही है। समकालीन हिंदी कविता में समाज में फैलती इस बुराई को समाप्त करने का प्रयास किया गया है तथा लोगों को जागरूक किया गया है। इसी व्यथा की अभिव्यक्ति 'पातीः अजन्मी बेटियों की' शीर्षक कविता में हुई है–

''आखिर क्यों है तुम्हें
हमारे अस्तित्व से इतनी चिढ़
हमारे कोमल सपनों से इतनी नफरत... ?
घर–बार जीने की चाह में छटपटाती
और, जन्म से पहले ही
मरने को मजबूर कर दी जाती
हम हैं, तुम्हारी अजन्मी बेटियाँ।''

इस प्रकार समकालीन हिंदी कविता में नारी के नकारात्मक और सकारात्मक – दोनों रूपों को अभिव्यक्ति मिली है। आज का कवि नारी की उच्छृंखल, अश्लील और मादक गतिविधियों से आक्रोशित है तो दूसरी ओर वह उसको समाज का प्रतिष्ठित और गरिमामय आदर भी प्रदान करता है। नारी के सभी रूपों को चित्रित करते हुए समकालीन कवि ने नारी की महत्ता का वर्णन इस प्रकार किया है–

क्रीतदासी, स्वामिनी, आराध्य हो, आराधिका भी
प्राण मोहन कृष्ण हो तुम, शरण अनुगत राधिका भी
सहचरी हो, भार्या हो, वन्दनीय अम्बिका भी
भक्ति की कृति हो स्वयं,भक्त की प्रतिपालिका भी।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि समकालीन हिंदी काव्य में नारी के सभी रूपों को कवि ने वाणी दी है। जिन सामाजिक प्रभावों और वैज्ञानिक यान्त्रिक प्रभावों के कारण विश्व जीवन और व्यवहार में अनेक परिवर्तन आए हैं, उन सबका प्रभाव नारी–जीवन पर आना भी स्वाभाविक है। इसी कारण उसके व्यवहार , विचार, जीवन–शैली तथा संस्कारों में व्यापक परिवर्तन परिलक्षित होते हैं। इन समस्त परिवर्तनों को आज के कवियों ने अपने–अपने दृष्टिकोण से ग्रहण कर अभिव्यक्त किया है।

संदर्भ

1. प्रसाद–कामायनी, पृ. 238
2. अतुल कृष्ण गोस्वामी–नारी महाकाव्य, पृ. 198
3. जगन्नाथ प्रसाद मिलिन्द–भूमि की अनुभूति, पृ. 28
4. बालकृष्ण शर्मा, 'नवीन'–हम विषपायी जनम के, पृ. 522
5. प्रसाद– कामायनी, पृ. 13
6. वहीः अपना आकाश, वही, पृ. 61
7. उदय प्रकाशः औरतें, वहीं, पृ. 107